देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115
Sept. 2025
Vol.-22, Issue-3(2)

Impact Factor
8.642

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

21वीं सदी का साहित्य : नव विमर्श

Special Issue Editor :
Dr. Poornima S.

Special Issue Co-Editor :
Dr. Anuradha P
Ms. V. Amudha

Editor :
Dr. Naresh Sihag
Advocate

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
#202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. 22 ISSUE-3(2) (सितम्बर 2025) ISSN : 2395-7115

प्रेरणा :
चौ. एम. सिहाग

विशेषांक सम्पादिका :
डॉ. पूर्णिमा एस.,
डॉ. अनुराधा पी.,
मिस वी. अमुधा

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल', एडवोकेट
एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),
एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिब., एल-एल.बी. (ऑनर्स),
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)
डी.लिट् (मानद उपाधि), काठमांडू, नेपाल

प्रकाशक :
गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,
भिवानी-127021 (हरियाणा)
Email : nksihag202@gmail.com
मो. 09466532152

Published by :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board,
Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA
Email : grsbohal@gmail.com
Facebook.com/bohalshodhmanjusha
Website : www.bohalsm.blogspot.com
WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1100/-

Disclaimer :

1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

53.	मिट्टी से बना अन्न	डॉ. टी. अरूणा कुमारी	285–289
54.	हसीनाबाद उपन्यास में नारी विमर्श	डॉ. अर्चना शर्मा	290–293
55.	भारतीय महिलाओं को सशक्त बनाने में कानूनी अधिकारों की भूमिका	विवेचना पाण्डेय, डॉ. सरिता भवानी मालवीय	294–300
56.	**Therigatha : Legacy and Relevance in 21st Century Indian Literature**	**Indresh Prasad Purohit**	**301-310**
57.	डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट की कविताओं में यथार्थ विमर्श	डॉ. लता एस. पाटिल	311-315
58.	**Entrepreneurial Self-Efficacy and Entrepreneurial Intentions of Tribal Women: A case Study of Chhattisgarh, India.**	**Dimpal Agrawal**	**316-328**
59.	**The Anatomy of Indifference : Literature as an Antidote to Modern Insensitivity**	**Dr. S. Farhana Zabeen, Dr. I. Jane Austen**	**329-334**
60.	**Quest for Self-Identity and Independence of Women in Preeti Shenoy's The Secret Wishlist**	**Dr. R. Abeetha, Dr.A. Jayashree Prabhakar**	**335-345**
61.	**Feminine Isolation and Resistance through Nature in Anita Desai's *Fire on the Mountain***	**Ms.Greeshma N.P, Dr. I. Jane Austen**	**346-351**
62.	बैंकिंग क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमता के अनुप्रयोग की संभावनाएं और चुनौतियां	डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन, श्री एच पंढरीनाथ	352–355
63.	मॉरिशस के समकालीन प्रवासी हिन्दी साहित्यकार अभिमन्यु अनत और रामदेव धुरन्धर के सृजनात्मक विचारों का अध्ययन	वी. अमुधा, डॉ. अनुराधा पाकलापाटि	356–360
64.	डॉ. विद्या बिंदु सिंह के कथा–साहित्य में बदलते सामाजिक सरोकार	जे. अशोक कुमार जैन, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	361–365
65.	मंजरी : किन्नर विमर्श	डी श्रीदेवी, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	366–369
66.	सामाजिक माध्यम और इंटरनेट पर रचनात्मकता : नए माध्यम एवं नई भाषा (बाल साहित्य के संदर्भ में)	गुरू गोविंद विश्वत, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	370–375
67.	वृद्धों के प्रति संवेदनहीन होती मनुष्यता	बी. कमला, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	376–381
68.	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कथा साहित्य में बदलता हुआ सामाजिक यथार्थ	डॉ. अनुराधा पी.	382–386
69.	कृष्नचंदर कृत 'जामुन का पेड़' कहानी में प्रशासनिक विमर्श	डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	387–392

70.	21वीं सदी के नारी विमर्श–रेत समाधि	पूर्णिमा. जे, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	393–397
71.	'बुद्धिमानों की मूर्खता' : सुरेंद्र शर्मा के व्यंग्य निबंधों में राजनीतिक विमर्श	प्रिया. एस, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	398–403
72.	21वीं सदी में तमिलनाडु स्थित बैंकों में राजभाषा कार्यान्वयन एवं हिंदी गृहपत्रिकाओं का प्रकाशन : एक नव विमर्श	श्री एम. संजीवी कनी, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	404–411
73.	पर्यावरण विमर्श : साहित्य में पारिस्थितिकी और प्रकृति चिंतन (बाल कहानियों के संदर्भ में)	वेंकट शिल्पा काकि, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	412–416
74.	21वीं सदी के आधुनिक हिन्दी उपन्यास बेहया में केंद्रित नारी	अमरजीत	417–422
75.	हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श और कथा साहित्य में स्त्री दृष्टि	Mrs. S. Subha	423-425
76.	भूमिका द्विवेदी कृत 'किराये के मकान' उपन्यास में चित्रित महानगरीय जीवन की समस्याएँ	आर. डी. निर्मला, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	426–430
77.	पर्यावरण विमर्श और 21वीं सदी के उपन्यास	संगीता कुमारी	431–435
78.	समकालीन साहित्य में किसान विमर्श	इ. जाक्कुलिन, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	435–442
79.	इक्कीसवीं शताब्दी में उपन्यास–साहित्य के समक्ष चुनौतियाँ	डॉ. के आनंदी	443–446

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Sept. 2025 Page No. : 404-411

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

21वीं सदी में तमिलनाडु स्थित बैंकों में राजभाषा कार्यान्वयन एवं हिंदी गृहपत्रिकाओं का प्रकाशन : एक नव विमर्श

श्री एम. संजीवी कनी, पी.एच.डी. शोधार्थी
डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन, शोध निर्देशिका एवं सहायक आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
हिंदी विभाग, Vels Institute of Science Technology and Advanced Studies (VISTAS)
पल्लावरम, चेन्नै, तमिलनाडु।

शोध का सार :

प्रस्तुत शोध पत्र 21वीं सदी में तमिलनाडु राज्य स्थित विभिन्न सार्वजनिक बैंकों का परिचय देते हुए इन बैंकों में हिंदी की भूमिका एवं राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी विभिन्न पहलुओं तथा हिंदी गृह–पत्रिकाओं के प्रकाशन आदि का संक्षिप्त विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन तमिलनाडु राज्य स्थित सार्वजनिक बैंकों में भारत के संघ सरकार की राजभाषा नीति का कार्यान्वयन, क्षेत्रीय भाषाई पहचान की चुनौतियां और राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में हिंदी गृहपत्रिकाओं के योगदान पर केंद्रित है। शोध–पत्र के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि तमिलनाडु राज्य स्थित बैंकों में राजभाषा का प्रयोग केवल संवैधानिक दायित्व नहीं, बल्कि एक जटिल सामाजिक–भाषाई प्रक्रिया भी है। राज्य के स्कूलों एवं महाविद्यालयों में त्रिभाषा सूत्र के अभाव के बावजूद बैंक कर्मचारियों को विभिन्न सरकारी योजनाओं एवं हिंदी सीखने की ऑनलाइन सुविधाओं के अधीन राजभाषा हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान दिलाया जाता है। बैंकों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों के अथक प्रयासों एवं कर्मचारियों के सहयोग के परिणामस्वरूप राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में वांछित अपेक्षाएं पूरी की जाती हैं। बैंकों द्वारा प्रकाशित हिंदी गृहपत्रिकाओं के माध्यम से बैंक कर्मचारियों की हिंदी में सृजनशीलता एवं रचनात्मकता को प्रोत्साहन दिया जाता है।

बीज शब्द : राजभाषा कार्यान्वयन, बहुभाषी दृष्टिकोण, संवैधानिक दायित्व, कार्यसाधक ज्ञान, भाषाई प्राथमिकता, सामासिक विकास, गृहपत्रिका, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन अधिगम।

प्रस्तावना :

21वीं सदी के बैंकिंग क्षेत्र में तकनीकी क्रांति के साथ–साथ भाषाई नीतियों का कार्यान्वयन एक महत्वपूर्ण चुनौती बनकर उभरा है। विश्व के वरिष्ठ जीवंत, समृद्ध एवं शास्त्रीय तमिल भाषा के लिए सुप्रसिद्ध तमिलनाडु राज्य में राजभाषा हिंदी के प्रयोग एवं कार्यान्वयन का मुद्दा विशेष रूप से संवेदनशील है। राजभाषा अधिनियम, 1963 और उसके बाद के संशोधनों के अनुसार, सभी केंद्रीय सरकारी कार्यालयों और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों समेत सभी उपक्रमों में राजभाषा हिंदी का प्रगामी प्रयोग अनिवार्य है, लेकिन इसका व्यावहारिक कार्यान्वयन

तमिलनाडु जैसे राज्यों में कई चुनौतियां प्रस्तुत करता है। राज्य के अधिकांश स्कूलों एवं महाविद्यालयों में अपनाई जाने वाली द्विभाषा नीति के कारण राज्य स्थित बैंकों के अधिकतर कर्मचारीगण हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान नहीं रखते हैं। तथापि हिंदी शिक्षण योजना व राष्ट्रीय महत्व प्राप्त संस्था दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के अधीन संचालित विभिन्न हिंदी पाठ्यक्रमों द्वारा बैंक कर्मचारियों को हिंदी का ज्ञान प्राप्त होता है। हमें यह ध्यान देना अनिवार्य है कि बैंकिंग क्षेत्र में भाषा का प्रश्न केवल प्रशासनिक नहीं है, बल्कि यह ग्राहक सेवा, वित्तीय समावेशन, और सामाजिक न्याय के मुद्दों से भी गहरे रूप से जुड़ा हुआ है। तमिलनाडु में राजभाषा नीति के अनुरूप सार्वजनिक बैंकों में क्षेत्रीय भाषा तमिल, राजभाषा हिंदी और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए अंग्रेजी का प्रयोग किया जाता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

तमिलनाडु में राजभाषा का इतिहास 1960 के दशक के भाषा आंदोलनों से गहरे रूप से जुड़ा है। 14 सितंबर 1949 को भारत के संसद द्वारा हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत करने के साथ–साथ हिंदीतर क्षेत्रों में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए 15 वर्षों की अवधि निर्धारित की गई थी। इन 15 वर्षों की अवधि समाप्त होने की स्थितद्दि पर राज्य में हिंदी विरोध आंदोलन तेजी होने लगा। यह माना गया कि राजभाषा के रूप में हिंदी थोपी जाती है, जिसका भीषण विरोध किया गया। राजभाषा अधिनियम, 1963 के तहत संविधान द्वारा प्रदत्त आश्वासन के बाद स्थिति सामान्य हुई। 1965 में हिंदी विरोधी आंदोलन के बाद राज्य में राजभाषा नीति के प्रति एक विशेष दृष्टिकोण विकसित हुआ। बैंकिंग क्षेत्र में वर्ष 1969 में बैंकों के राष्ट्रीयकरण के बाद राजभाषा नीति का कार्यान्वयन अधिक व्यवस्थित और तीव्र हुआ। डॉ. सुभाष कश्यप, भारतीय वित्तीय अर्थशास्त्री, का मानना है कि 'भारतीय वित्तीय क्षेत्र में हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं का उपयोग न केवल संवैधानिक दायित्व है, बल्कि यह वित्तीय समावेशन का एक महत्वपूर्ण साधन भी है।' (कश्यप, 2019)[1]

तमिलनाडु के सार्वजनिक बैंकों में राजभाषा की स्थिति :

तमिलनाडु के सार्वजनिक बैंकों में राजभाषा के कार्यान्वयन की स्थिति मिश्रित है। सभी सार्वजनिक बैंकों में राजभाषा कार्यान्वयन के विशेष उद्देश्य से राजभाषा विभागों / अनुभागों / कक्षों की स्थापना की गई। इन बैंकों में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी वार्षिक कार्यक्रम के अनुरूप उचित कदम उठाए जाते हैं। भारत सरकार की हिंदी शिक्षण योजना के अधीन बैंक के कर्मचारियों को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान दिलाया जाता है। कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने हेतु विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएं लागू हैं। इसके तहत विविध हिंदी प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती हैं। कार्यालय स्तर पर गठित राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के जरिए सामूहिक प्रयास भी किए जाते हैं। हालांकि, व्यावहारिक स्तर पर अधिकांश कार्य अभी भी अंग्रेजी और तमिल में किया जाता है। तमिलनाडु राज्य में संघ की राजभाषा हिंदी के प्रयोग में मुख्य बाधाएं हैं :

- कर्मचारियों में हिंदी भाषा की दक्षता का अभाव।
- ग्राहकों की हिंदी भाषा में सेवा की मांग कम होना।
- हिंदी तकनीकी शब्दावली में अनुवाद की जटिलता।
- स्थानीय राजनीतिक संवेदनाएं।

प्रोत्साहन योजनाएं :

राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएं चलाई जा रही हैं। राजभाषा शील्ड योजना, प्रशंसा–पत्र योजना, नकद पुरस्कार योजना और हिंदी शिक्षण योजना के तहत आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम यथा प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ, बैंकिंग प्राज्ञ और पारंगत इनमें प्रमुख हैं। तमिलनाडु में इन योजनाओं का प्रभाव अत्यंत उपयुक्त रहा है। राजभाषा हिंदी में स्टाफ सदस्यों की लेखन कला एवं सृजनात्मकता को बढावा देने के उद्देश्य से सार्वजनिक बैंकों द्वारा हिंदी गृह–पत्रिकाओं का नियमित अंतराल में प्रकाशन किया जाता है। लेखक डॉ. माणिक मृगेश के अनुसार "राजभाषा पत्रिकाएं अपने उद्देश्यों की पूर्ति करते हुए राजभाषा गतिविधियों तथा अप्रकाशित प्रतिभाओं को प्रकाश में लाते हुए राष्ट्र की सेवा में सतत रही हैं। आज राजभाषा पत्रकारिता राजभाषा की एक मुख्य प्रवृत्ति बनकर उभरी है।"[2]

बैंकों द्वारा प्रकाशित हिंदी गृहपत्रिका : बैंकों द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिकाओं को भारत सरकार के वेबसाइट में ऑनलाइन माध्यम से अपलोड किया जाता है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा उत्तम हिंदी गृह पत्रिकाओं को हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' देते हुए सम्मानित किया जाता है। बैंकों के मुख्यालय स्तर पर भी उत्तम हिंदी गृह पत्रिकाओं को पुरस्कार देते हुए सम्मानित किया जाता है। इन गृह पत्रिकाओं में लेख–आलेख का योगदान करने वाले स्टाफ सदस्यों को उचित मानदेय या पुरस्कार देकर सम्मानित किया जाता है। हिंदी गृहपत्रिका के स्वरूप के बारे में लेखक श्री हरिबाबू कंसल के अनुसार – "किसी विभाग द्वारा हिंदी पत्रिका का प्रकाशन तभी सार्थक है जब उससे वहां के कर्मचारियों को सरकारी कामकाज हिंदी में करने के लिए प्रेरणा भी मिले। यह उद्देश्य, दृष्टि से ओझल नहीं होना चाहिए।"[3]

तमिलनाडु स्थित प्रमुख सार्वजनिक बैंकों एवं उनकी हिंदी गृहपत्रिकाएं :

इंडियन बैंक :

इंडियन बैंक भारतीय बैंकिंग क्षेत्र के सबसे प्राचीन और प्रतिष्ठित सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में से एक है। बैंक के कॉर्पोरेट कार्यालय द्वारा छमाही हिंदी गृहपत्रिका "इंड छवि" प्रकाशित की जाती है। बैंक के प्रशिक्षण संस्थान 'इमेज' द्वारा भी छमाही हिंदी गृहपत्रिका "इमेज संवाद" प्रकाशित की जा रही है। बैंक के कॉर्पोरेट कार्यालय की छमाही हिंदी गृहपत्रिका "इंड छवि" के दिसंबर 2013 अंक में कर्मचारी श्री अजी. ए. नायर ने "खुशहाल जीवन" लेख में व्यक्ति को अपना जीवन खुशहाल बनाने के लिए अपनी जीवन शैली में किए जाने वाले आवश्यक परिवर्तनों पर रेखांकित करते हुए कहा कि "गैजेट्स और तकनीकी उत्पादों का उपयोग आवश्यकतानुसार ही हो। लोगों से मेलजोल और भाईचारे की भावना बढ़ाते हुए एक दूसरे के सुख व दुख में शामिल हो।"

इसी पत्रिका के अंक–6 (सितंबर 2012) में बैंक की कर्मचारी सुश्री वीणा ने अपनी स्वरचित कविता "पिता" प्रस्तुत की है। इस कविता में उन्होंने पिता के सदगुणों का वर्णन करते हुए उनकी त्याग भावना को उजागर किया है। उनके अनुसार :–

"पिता कष्ट व संघर्ष का दूसरा नाम है
पिता छोटी सी पक्षी का बड़ा आसमान है
पिता का आशीर्वाद जीवन भर साथ है
पिता के बिना बचपन अनर्थ है।"

बैंक के प्रशिक्षण केंद्र इमेज की छमाही हिंदी पत्रिका इमेज संवाद – अंक मार्च 2024 में कर्मचारी सुश्री लक्ष्मी शारदा एस आर ने "तमिल भाषा और साहित्य का विकास" विषय पर अपना निबंध प्रस्तुत किया है। इस निबंध में उन्होंने तमिल भाषा की समृद्धि एवं उसके साहित्य के विकास पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि "तमिल साहित्य परंपरा भारत के शास्त्रीय संस्कृत साहित्यध्कि परंपरा से स्वतंत्र है। यह संस्कृत भाषा के समानांतर ही भाषाई परंपरा का प्रतिनिधित्व करती है।"

इसी पत्रिका के सितंबर 2024 अंक में बैंक की कर्मचारी सुश्री कल्याणी हरि ने "महाकवि सुब्रमण्य भारती" विषय पर आलेख प्रस्तुत किया है। उन्होंने तमिलनाडु के राष्ट्रकवि श्री सुब्रमण्य भारती के जीवन, उनकी कृतियों का उल्लेख करते हुए कहा कि "उनकी रचनाओं में एक ओर जहां गूढ़ धार्मिक बातें होती थी वहीं रूस और फ्रांस की क्रांति की भी जानकारी होती थी। वे समाज के वंचित वर्ग और निर्धन लोगों की बेहतरी के लिए प्रयासरत थे।"

इंडियन ओवरसीज बैंक :

इंडियन ओवरसीज बैंक की स्थापना 1937 में की गई थी और इसका मुख्यालय भी चेन्नई में है। इसकी स्थापना प्रवासी भारतीयों, विशेषकर दक्षिण भारतीयों की बैंकिंग आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए की गई थी। बैंक के केंद्रीय कार्यालय द्वारा तिमाही हिंदी गृहपत्रिका "वाणी" प्रकाशित की जाती है, जिसे राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा श्रेष्ठ हिंदी गृहपत्रिका के रूप में पुरस्कत भी किया गया है। तमिलनाडु राज्य भर बैंक के 15 क्षेत्रीय कार्यालय होते हैं जिनके द्वारा अपने–अपने क्षेत्रीय कार्यालय स्तर पर भी तिमाही हिंदी गृहपत्रिकाएं नियमित रूप से प्रकाशित की जाती हैं। चेन्नै क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा "उत्कर्ष", वेल्लूर कार्यालय द्वारा "रोशनी", कोयम्बत्तूर कार्यालय द्वारा "कोवै ज्योति", मदुरै कार्यालय द्वारा "मदुरै वाणी", तिरुनेलवेली कार्यालय द्वारा "नेल्लै दर्शन" और नागरकोइल कार्यालय द्वारा "त्रिवेणी दर्शन" आदि तिमाही हिंदी गृहपत्रिकाएं प्रकाशित की जाती हैं।

बैंक के कोयंबत्तूर क्षेत्रीय कार्यालय की तिमाही हिंदी गृहपत्रिका "कोवै ज्योति" के अंक 10 (मार्च 2024) में बैंक की कर्मचारी सुश्री के. यु. षाहिना ने "जी हाँ, मैं भारतीय नारी हूँ..." विषय पर आलेख प्रस्तुत किया है। उन्होंने इस आलेख में भारतीय नारी के श्रेष्ठ गुणों तथा उनके विभिन्न नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का भी उल्लेख किया है। इस संदर्भ में उन्होंने लिखा है कि "आज की नारी का सफर चुनौतीभरा जरूर है, पर आज उसमें चुनौतियों से लड़ने का साहस आ गया है। चुनौतियों को हंसकर स्वागत करने वाली महिलाएं आज हर क्षेत्र में अपना लोहा मनवा रही हैं।"

पत्रिका के इसी अंक में बैंक की एक अन्य कर्मचारी सुश्री ग्रेस जेभ रानी ने "जीवन में वर्क लाइफ संतुलन की आवश्यकता" विषय पर अपना लेख प्रस्तुत किया है। आज के युग में बैंकिंग क्षेत्र के प्रत्येक कर्मचारियों को अपने निजी जीवन में वर्क लाइफ संतुलन पर ध्यान देना अत्यावश्यक है। इस संतुलन के बिना बैंक कर्मचारी न अपने कार्य और निजी जीवने में सफल नहीं हो पाते हैं। वर्क लाइफ संतुलन को कायम रखने के लिए उनकी सलाह है कि "समय के उपयोग का विश्लेषण करना और चीजों को प्राथमिकता के आधार पर करना, कार्यस्थल पर काम छोडना तथा काम और घर के बीच एक स्पष्ट सीमा निर्धारित करना जैसी कुछ आदतों का पालन करके वर्क–लाइफ संतुलन सुनिश्चित करना कर्मचारी की जिम्मेदारी है।"

बैंक के केंद्रीय कार्यालय की तिमाही हिंदी गृहपत्रिका "वाणी" के अंक 144 (मार्च 2025) में बैंक के

कार्यपालक श्री एस. राधाकृष्णन ने "आपकी डिजिटल पहचान मायने रखती है : इसे ऑनलाइन सुनिश्चित रखें" विषय पर निबंध प्रस्तुत किया है। इस निबंध में उन्होंने डिजिटल युग में बैंकिंग क्षेत्र के ग्राहकों समेत सभी को अपनी डिजिटल पहचान की सुरक्षा के लिए कुछ तकीनीकी सुझाव प्रस्तुत किए हैं। डिजिटल पहचान की सुरक्षा की आवश्यकता पर बल देते हुए उन्होंने लिखा है कि "साइबर अपराध और पहचान की चोरी के बढ़ते जोखिम के साथ, अपनी ऑनलाइन उपस्थिति का प्रबंधन करना और अपनी व्यक्तिगत जानकारी की सुरक्षा करना महत्वपूर्ण है। आपको अपनी ऑनलाइन गतिविधियों के बारे में चौकन्ने और सतर्क रहना चाहिए।"

भारतीय स्टेट बैंक :

भारत का सबसे बड़ा सार्वजनिक क्षेत्र का बैंक, भारतीय स्टेट बैंक तमिलनाडु में भी अपनी मजबूत उपस्थिति रखता है। तमिलनाडु की राजधानी चेन्नै में भारतीय स्टेट बैंक का स्थानीय प्रधान कार्यालय स्थित है। चेन्नै स्थित बैंक के स्थानीय प्रधान कार्यालय द्वारा पहले "वटवृक्ष" नामक छमाही हिंदी गृहपत्रिका प्रकाशित की जाती थी। वर्तमान में बैंक द्वारा छमाही हिंदी गृहपत्रिका "प्रवाह" प्रकाशित की जाती है।

बैंक की छमाही हिंदी गृहपत्रिका "प्रवाह" के अंक 2 (वर्ष 2023) में बैंक की कर्मचारी सुश्री महिता जी. पी. ने "क्या पाया और क्या खोया" विषय पर अपनी स्वरचित कविता प्रस्तुत की है। उन्होंने अपनी कविता में आम तौर पर बैंक कर्मचारियों द्वारा अपने व्यस्त दैनिक जीवन में किस–किस उपलब्धियों के लिए क्या–क्या खोना पड़ा उसका सजीव चित्रण किया है। उनकी कविता की पंक्तियां इस प्रकार है कि :

''व्यवसाय में तो हम जीत गए, लेकिन जवानी के दिन तो बीत गए।
काम में पदोन्नति तो प्राप्त किया, पर जीवन का मनोरंजन समाप्त हुआ।
खाते में बहुत पैसे जमा किए, लेकिन सच्चे दोस्तों को न कमा पाए।''

पत्रिका के इसी अंक में बैंक की कर्मचारी सुश्री सुभा एम कृष्णन ने "क्या जीवन केवल मेरे लिए ही चुनौतियों से भरा है?" विषय पर आलेख प्रस्तुत किया है। उन्होंने इस आलेख में चुनौतियों का सामना करने के लिए आत्मविश्वास की आवश्यकता पर बल दिया। इसी आशय को एक लघु कहानी के माध्यम से प्रस्तुत करते हुए कहती हैं कि "एक बार जब आप अपने पर विश्वास करना शुरू कर देते हैं तो जादू होना शुरू हो जाता है।" आपत्ति के समय व्यक्ति को स्वयं पर भरोसा करने और आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए किए जाने वाले प्रयासों को भी रेखांकित किया।

पत्रिका के इसी अंक में डॉ. राधिका राजगोपाल, बैंक की चिकित्सा अधिकारी ने "बुनियादी जीवन सहायता" विषय पर अपना लेख प्रस्तुत किया है। उन्होंने इस लेख में सड़क दुर्घटना या अत्यधिक तनाव के कारण हार्ट अटैक अथवा बेहोशी होने की स्थिति में सीपीआर (कार्डियो पलमोनरी रीससिटेशन) करने की आवश्यकता एवं उसकी प्रक्रिया समझायी। इस संदर्भ में उन्होंने लिखा कि "जीवन सहायता एक ऐसी प्रक्रिया है जो अस्पताल के बाहर दुर्घटना स्थल पर बिना किसी उपकरण से की जा सकती है। केवल हाथों के प्रयोग द्वारा छाती के बीचों–बीच दबाव डालकर रुके हुए हृदय को जीवित रख सकते हैं।"

पंजाब नेशनल बैंक :

पंजाब नेशनल बैंक, नई दिल्ली में मुख्यालय रखने वाला प्रमुख सार्वजनिक बैंक है जिसका अंचल कार्यालय तमिलनाडु की राजधानी चेन्नै स्थित है जिसके अधीन चेन्नै, कोयंबत्तूर और तिरुच्ची आदि तीन क्षेत्रीय

कार्यालय होते हैं। बैंक के चेन्नै अंचल कार्यालय द्वारा छमाही हिंदी गृहपत्रिका "दक्षिण दर्पण" प्रकाशित की जाती है। गृहपत्रिका के अंक 1 (सितंबर 2024) में बैंक की कर्मचारी सुश्री एल. लावण्या ने "महिला सशक्तीकरण" विषय पर अपना निबंध प्रस्तुत किया है। उन्होंने इस निबंध में महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता संबंधी पृष्ठभूमि देती हुई इस क्षेत्र में अब तक प्राप्त उपलब्धियों को भी रेखांकित किया। उनके शब्दों में "महिलाएं ज्यादा खुले दिमाग की होती हैं और सभी आयामों में अपनी अधिकारों को पाने के लिए सामाजिक बंधनों को तोड़ रही हैं।"

बैंक की हिंदी गृहपत्रिका के अंक 2 (मार्च 2025) में कर्मचारी सुश्री अनुपमा टी. के. ने "भारतीय भाषाओं में समृद्ध हो रही हिंदी" विषय पर लेख प्रस्तुत किया है। उन्होंने लेख में राजभाषा हिंदी को समृद्ध करने में अन्य भारतीय भाषाओं के योगदान का वर्णन किया है। उनके अनुसार "हिंदी भारत की आत्मा है और इसकी शक्ति को बढ़ाने से हम भारतवासी देश की संस्कृति और अस्मिता को मजबूत कर सकते हैं।"

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया :

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, भारत का प्रमुख सार्वजनिक क्षेत्र का बैंक है। तमिलनाडु राज्य में बैंक के दो अंचल होते हैं यथा चेन्नै और कोयंबत्तूर। चेन्नै अंचल के अधीन 5 क्षेत्रीय कार्यालय होते हैं, वैसे ही कोयंबत्तूर अंचल के अधीन भी 5 क्षेत्रीय कार्यालय होते हैं। बैंक के विभिन्न क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा हिंदी गृहपत्रिकाएं प्रकाशित की जाती हैं। बैंक के चेन्नै उत्तर कार्यालय द्वारा "यूनियन चेन्नै", चेन्नै दक्षिण कार्यालय द्वारा "यूनियन नवरस", कांचीपुरम कार्यालय द्वारा "यूनियन कांची", कोयम्बत्तूर कार्यालय द्वारा "यूनियन नीलगिरि", तिरुप्पूर कार्यालय द्वारा "यूनियन परिधान", तिरुच्ची कार्यालय द्वारा "यूनियन सृष्टि" और सेलम कार्यालय द्वारा "यूनियन येरकाड" नामक हिंदी गृहपत्रिकाएं प्रकाशित की जाती हैं। इसी क्रम में बैंक के मदुरै आंचलिक कार्यालय द्वारा "यूनियन शक्ति" नामक तिमाही हिंदी गृहपत्रिका प्रकाशित की जाती है। इन गृहपत्रिकाओं में लेख–आलेख आदि का योगदान करने वाले बैंक के कर्मचारियों को उचित मानदेय अदा करते हुए सम्मानित किया जाता है।

बैंक के चेन्नै (दक्षिण) क्षेत्रीय कार्यालय की छमाही हिंदी गृहपत्रिका "नवरस" के अंक 1 (सितंबर 2022) में बैंक कर्मचारी श्री एम. एस. श्रीधर ने "तंजौर चित्रकला" विषय पर लेख लिखा है। इस लेख में तमिलनाडु के प्रसिद्ध शहर तंजावूर के विशिष्ट चित्रकला तंजावूर पेइंटिंग की विशेषताओं के बारे में लिखा कि "तंजौर पेइंटिंग अपने जीवंत रंगों और भड़कीले अंलकरणों के लिए जाना जाता है। विशेष रूप से सोने की पन्नी, कीमती पत्थर, कांच के टुकड़ों का उपयोग करते हुए देवी–देवताओं के असाधारण चित्रण अपने आप में विलक्षण लगता है। इसे 2007–08 में भारत सरकार द्वारा भौगोलिक संकेत के रूप में पहचाना गया।"

बैंक के चेन्नै (दक्षिण) क्षेत्रीय कार्यालय की छमाही हिंदी गृहपत्रिका "नवरस" के अंक 2 (मार्च 2023) में बैंक के कर्मचारी श्री आई करुप्पसामी ने "किडनी को कैसे स्वस्थ रखें" विषय पर आलेख का योगदान किया है। इस आलेख में उन्होंने लिखा है कि "किडनी का प्रमुख काम रक्त से पानी और सोडियम को अलग करना है। इसके अलावा किडनी एंजाइम रेनिन बनाता है, जो रक्तचाप को कंट्रोल करने में अहम भूमिका निभाता है।" इस प्रकार उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति को अपनी किडनी को स्वस्थ रखने के लिए किए जाने वाले उपाय तथा इस आशय के लिए खाने लायक फल और सब्जी संबंधी विवरण भी प्रस्तुत किया है। पत्रिका के इसी अंक में एक और कर्मचारी सुश्री के राजलक्ष्मी ने तमिलनाडु के घरों में विशेष रूप से बनाए जाने वाले "टमाटर रसम रेसिपी" प्रस्तुत की है। उन्होंने रसम तैयार करने के लिए आवश्यक सामग्री तथा बनाने की विधि आसान शब्दों में वर्णन किया

है जो पाठक वर्ग के लिए उपयोगी भी है।

बैंक ऑफ इंडिया :

बैंक ऑफ इंडिया की स्थापना 7 सितंबर 1906 को मुंबई के प्रख्यात व्यवसायियों के एक समूह द्वारा की गई थी। तलिनाडु राज्य में वर्तमान में बैंक ऑफ इंडिया के तीन अंचल कार्यालय होते हैं यथा चेन्नै अंचल, मदुरै अंचल और कोयंबत्तूर अंचल। चेन्नै अंचल के अधीन 80 से अधिक शाखाएं होती हैं। बैंक के चेन्नै आंचलिक कार्यालय द्वारा तिमाही हिंदी गृहपत्रिका "वणक्कम हिंदी" प्रकाशित की जाती है। बैंक की चेन्नै अंचल की तिमाही हिंदी गृहपत्रिका के अंक 12 (जून 2025) में बैंक के कर्मचारी श्री वम्सी किरण ने "खुशी" विषय पर अपनी कविता प्रस्तुत की है। उन्होंने खुशियों का एहसास करने पर लिखा कि :

"न पैसे की है, न किसी महल की, खुशी है दिल की हलचल की।
कभी बारिश की पहली बूँद में, कभी मिट्टी की उस खुशबू में।
खुशी है सबके मुस्कानों में, बस जीने में हैं, कहने में नहीं।"

केनरा बैंक :

केनरा बैंक की स्थापना एक महान दूरदर्शी और परोपकारी श्री अम्मेम्बाल सुब्बा राव पै ने जुलाई 1906 में मंगलोर में की थी, जो उस समय कर्नाटक का एक छोटा बंदरगाह शहर था। तमिलनाडु राज्य में बैंक के दो अंचल कार्यालय होते हैं यथा चेन्नै अंचल और मदुरै अंचल। चेन्नै अंचल कार्यालय द्वारा छमाही हिंदी गृहपत्रिका "चेन्नै सेय्दगिल" और मदुरै अंचल कार्यालय द्वारा छमाही हिंदी गृहपत्रिका "यवनिका" प्रकाशित की जाती हैं।

बैंक के मदुरै अंचल कार्यालय की छमाही हिंदी गृहपत्रिका "यवनिका" के प्रवेशांक (मार्च 2025) में बैंक की कर्मचारी सुश्री ना. सुजाता ने "एक से भले दो" विषय पर अपनी लघु कहानी प्रस्तुत की है। उन्होंने इस लघु कहानी के जरिए जंगल के दो जानवर चिक्कू नामक खरगोश और बंटी नामक कछुए के बीच की दोस्ती के फायदे का वर्णन किया है। शीत काल में जब बंटी बीमार पड़ती है तो उसे बचाने के लिए चिक्कू जंगल के वैद्य भोलू के कहे अनुसार जड़ीभूति ढूंढकर उसे समय पर ले आकर बंटी को इस प्रकार बचाया हहै कि "भोलू वैद्य ने जैसा पौधा बताया था, चिक्कू ने दूर से ही उसे पहचान लिया। अब पौधा चिक्कू के हाथ में था। वह लौट पड़ा। उसकी तत्परता के कारण बंटी जल्द ही ठीक हो गया।"

पत्रिका के इसी अंक में बैंक की एक अन्य कर्मचारी सुश्री एस. बी. प्रतिभा ने "प्रकृति की ओर" विषय पर अपनी कविता प्रस्तुत की है। उन्होंने अपनी कविता में शहरी जीवन में आदमी जिन–जिन विषयों से वंचित है उनका सजीव वर्णन किया है। शहरी जीवन की विषम परिस्थितियों के बारे में लिखी हैं कि :

"मैं एक इंसान हूँ, मैं शहरों में थक गया हूँ।
मैं प्रकृति की ओर जा रहा हूँ, शांति पाने के लिए। .....
बादल हवा की तरह हल्के थे, और हवा के साथ उड़ रहे थे।
सूरज डूब गया, दिन का अंत हो गया, मेरी क्लांति का भी।।"

निष्कर्ष :

तमिलनाडु स्थित बैंकों में राजभाषा की भूमिका 21वीं सदी में जटिल एवं विकासशील है। भाषाई राजनीति, तकनीकी प्रगति, और ग्राहक की आवश्यकताओं के बीच संतुलन बनाने का चुनौतीपूर्ण कार्य जारी है। अध्ययन

से यह स्पष्ट होता है कि तमिलनाडु में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति सतत सही दिशा में अग्रसर हो रही है। डिजिटल बैंकिंग के विकास ने भाषाई विविधता के लिए नए अवसर प्रदान किए हैं। भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन उद्‌गम के प्रयोग से भाषा की बाधाएं और भी कम होंगी। सफल कार्यान्वयन के लिए संवेदनशील और समावेशी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। राजभाषा के साथ–साथ स्थानीय भाषाओं का सम्मान करते हुए बहुभाषी बैंकिंग सेवा का विकास प्रयत्नरत है। भाषाई दूरी को भगाकर न केवल संवैधानिक आवश्यकताओं को पूरा करेगा बल्कि भारत की भाषाई विविधता की भी प्रतिष्ठिा मिलेगी। जैसा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि, 'भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं है, यह एक संस्कृति, एक विरासत और एक पहचान है। हमारी वित्तीय प्रणाली में भारतीय भाषाओं का उपयोग हमारी अर्थव्यवस्था को अधिक समावेशी और लचीला बनाएगा।' (मोदी, 2023)[4]

उक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि बैंक कर्मचारियों ने हिंदी में प्रशिक्षण लेने के बाद, अपनी मन की बातें बेझिझक यथोचित रूप से प्रस्तुत कीं। इस उपलब्धि को प्रशिक्षण की सफलता का सबूत माना जाता है। हिंदी गृहपत्रिकाओं का नियमित प्रकाशन और बैंक के अधिकतम सदस्यों द्वारा लेख–आलेख आदि के योगदान के माध्यम से, सचमुच तमिलनाडु स्थित बैंकों में राजभाषा हिंदी के प्रति अनुकूल वातावरण निर्मित होने में सहायक सिद्ध है। कर्मचारी द्वारा हिंदी गृहपत्रिकाओं में योगदान के लिए अपना विचार स्वतंत्र रूप से रखने के अनुभव से अपना दैनिक कार्यालयीन कार्य यथा पत्राचार, टिप्पणी और फाइलों में अपना कार्य हिंदी में आसानी से कर पाते हैं। इसके परिणामस्वरूप बैंकों में हिंदी पत्राचार, टिप्पणी लेखन इत्यादि से संबंधित लक्ष्य प्राप्ति अनायास हो जाती है। विशेष रूप से तमिलनाडु स्थित जैसे हिंदीतर क्षेत्र में हिंदीतर भाषा–भाषियों को राजभाषा हिंदी में कार्य करने के लिए उत्सुकता और आत्म विश्वास बढ़ता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. कश्यप, सुभाष (2019). 'भारतीय वित्तीय क्षेत्र में राजभाषा का महत्व'. वित्तीय समावेशन अध्ययन, 28(2), 78–92.
2. राजभाषा की प्रवृत्तियां : डॉ. माणिक मृगेश : वाणी प्रकाशन, दिल्ली : प्रथम संस्करण 2006
3. राजभाषा नीति कार्यान्वयन : श्री हरिबाबू कंसल : प्रकाशक : सुधांशु बंधु, दिल्ली : चौथा संस्करण–2004
4. मोदी, नरेंद्र (2023). 'भारतीय भाषाओं का महत्व'. राष्ट्रीय शिक्षा नीति संगोष्ठी में दिया गया भाषण, नई दिल्ली, 15 मार्च 2023.

ई–मेल : snjv_kn@yahoo.co.in

मोबाइल नंबर 85499 10688